मगध साम्राज्य की स्थापना और उत्कर्ष :

⇒ हर्यक वंश : (पितृहंता वंश) → 544 ईसा पूर्व – 412 ईसा पूर्व)

संस्थापक :- बिम्बिसार (544 ईसा पूर्व - 492 ईसा पूर्व)

→ गौतम बुद्ध के समकालिन था

⇒ जैन साहित्य में बिम्बिसार को श्रेणिक कहा गया है ; मगध के आरम्भिक वंश हर्यक वंश का सबसे शक्तिशाली राजा था)

⇒ बिम्बिसार ने अंग महाजनपद के राजा ब्रह्मदत्त को पराजित करके अंग को मगध साम्राज्य में मिलाया।

वैवाहिक सम्बन्ध :

प्रथम पत्नी :- कोशल राज पुत्री व प्रसेनजीत की बहन महाकोशला के साथ हुआ।

द्वितीय पत्नी :- वैशाली की लिच्छवी राजकुमारी चेल्लना के साथ हुआ व इस से अजातशत्रु का जन्म हुआ।

तृतीय पत्नी :- क्षेमा (पंजाब के मद्र कुल के प्रधान की पुत्री)

⇒ राजवैद्य :- जीवक

→ राजगृह की गणिका सालवती का पुत्र था

② अजातशत्रु :- (492 BC - 460 BC)

⇒ उपनाम :- कुणिक

⇒ अजातशत्रु जैन धर्म व बौद्ध धर्म दोनों धर्मों का उपासक था, अपने शासनकाल के 8 वे वर्ष के दौरान

राजगृह में प्रथम बौद्ध संगिति करायी।

⇒ अजातशत्रु ने वज्जि संघ, काशी व कोशल को जीतकर मगध साम्राज्य का हिस्सा बनाया

③ उदयिन: (460BC - 444BC)
→ 445BC

→ उदयिन को गार्गी संहिता में धर्मात्मा कहा गया है।

⇒ गंगा व सोन नदी के संगम पर स्थित पाटलिपुत्र (कुसुमपुर) शहर को बसाया।

⇒ राजधानी :- पाटलिपुत्र

⇒ हर्यक वंश का अन्तिम शासक नागदशक था, जिसकी हत्या शिशुनाग ने कर दी।

शिशुनाग वंश :- (412 ईसा पूर्व – 345 ईसा पूर्व)

⇒ संस्थापक :- शिशुनाग (412 BC – 394 BC)

राजधानी
- पाटलिपुत्र
- वैशाली (वज्जियों पर नियन्त्रण रखने के लिए)

→ शिशुनाग ने अवन्ति तथा वत्स को जीतकर मगध साम्राज्य में मिलाया था

⇒ प्राचीन भारत में जनता के द्वारा चुने जाने वाला प्रथम ऐतिहासिक शासक शिशुनाग था।

② कालाशोक :- (394 — 366 BC)

उपनाम :- काकवर्ण

राजधानी → पाटलिपुत्र

→ शिशु नाग वंश का अन्तिम शासक नन्दिवर्धन थे।

द्वितीय बौद्ध संगिति बुलाई।